# ||सर्वसिद्धियदायक पितर स्तुति||

## SHRI RAJ VERMA JI

**Contact-** +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

**Email-** mahakalshakti@gmail.com


**For more info visit---**

www.scribd.com/mahakalshakti

# ।।स्तोत्रम्।।

रुचि बोले– जो श्राद्ध में अधिष्ठाता देवता के रूप में निवास करते हैं तथा देवता भी श्राद्ध में 'स्वधान्त' वचनों द्वारा जिनका तर्पण करते हैं, उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूं।

भक्ति और मुक्ति की अभिलाषा रखने वाले महर्षिगण स्वर्ग में भी मानसिक श्राद्धों के द्वारा भक्तिपूर्वक जिन्हें तृप्त करते हैं, सिद्धगण दिव्य उपहारों द्वारा श्राद्ध में जिनको संतुष्ट करते हैं, आत्यन्तिक समृद्धि की इच्छा रखने वाले गुह्यक भी तन्मय होकर भक्तिभाव से जिनकी पूजा करते हैं, भूलोक में मनुष्यगण जिनकी सदा आराधना करते हैं, जो श्राद्धों में श्रद्धापूर्वक पूजित होने पर मनोवांछित लोक प्रदान करते हैं, पृथ्वी पर ब्राह्मण लोग अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के लिये जिनकी अर्चना करते हैं तथा जो आराधना करने पर प्राजापत्य लोक प्रदान करते हैं, उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूं।

तपस्या करने से जिनके पाप धुल गये हैं तथा जो संयमपूर्वक आहार करने वाले हैं, ऐसे वनवासी महात्मा वन के फल-मूलों द्वारा श्राद्ध करके जिन्हें तृप्त करते हैं, उन पितरों को मैं मस्तक झुकाता हूं।



नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले संयतात्मा ब्राह्मण समाधि के द्वारा जिन्हें सदा तृप्त करते हैं, क्षत्रिय सब प्रकार के श्राद्धोपयोगी पदार्थों के द्वारा विधिवत् श्राद्ध करके जिनको संतुष्ट करते हैं, जो तीनों लोकों को अभीष्ट फल देने वाले हैं, स्वकर्मपरायण वैश्य पुष्प, धूप, अन्न और जल आदि के द्वारा जिनकी पूजा करते हैं तथा शूद्र भी श्राद्धों द्वारा भक्तिपूर्वक जिनकी तृप्ति करते हैं और जो संसार में सुकाली के नाम से विख्यात हैं, उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूं।

पाताल में बड़े-बड़े दैत्य भी दम्भ और मद त्यागकर श्राद्धों द्वारा जिन स्वधाभोजी पितरों को सदा तृप्त करते हैं, मनोवांछित भोगों को पाने की इच्छा रखने वाले नागगण रसातल में सम्पूर्ण भोगों एवं श्राद्धों से जिनकी पूजा करते हैं तथा मंत्र, भोग और सम्पत्तियों से युक्त सर्पगण भी रसातल में ही विधिपूर्वक श्राद्ध करके जिन्हें सर्वदा तृप्त करते हैं, उन पितरों को मैं नमस्कार करता हूं।

जो साक्षात् देवलोक में, अंतरिक्ष में और भूतल पर निवास करते हैं, देवता आदि समस्त देहधारी जिनकी पूजा करते हैं, उन पितरों को मैं नमस्कार करता हूं। वे पितर मेरे द्वारा अर्पित किये हुए इस जल को ग्रहण करें।



जो परमात्मस्वरूप पितर मूर्तिमान् होकर विमानों में निवास करते हैं, जो समस्त क्लेशों से छुटकारा दिलाने में हेतु हैं तथा योगीश्वरगण निर्मल हृदय से जिनका यजन करते हैं, उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूं।

जो स्वधाभोजी पितर दिव्यलोक में मूर्तिमान् होकर रहते हैं, काम्यफल की इच्छा रखने वाले पुरुष की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं और निष्काम पुरुषों को मोक्ष प्रदान करने वाले हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूं।

वे समस्त पितर इस जल से तृप्त हों, जो चाहने वाले पुरुषों को इच्छानुसार भोग प्रदान करते हैं, देवत्व, इन्द्रत्व तथा उससे भी ऊंचे पद की प्राप्ति कराते हैं; इतना ही नहीं, जो पुत्र, पशु, धन, बल और गृह भी प्रदान करते हैं। जो पितर चन्द्रमा की किरणों में, सूर्य के मण्डल में तथा श्वेत विमानों में सदा निवास करते हैं, वे मेरे दिये हुए अन्न, जल और गंध आदि से तृप्त एवं पुष्ट हों। अग्नि में हविष्य का हवन करने से जिनकों

तृप्ति होती है, जो ब्राह्मणों के शरीर में स्थित होकर भोजन करते हैं तथा पिण्डदान करने से जिन्हें प्रसन्नता प्राप्त होती है, वे पितर यहां मेरे दिये हुए अन्न और जल से तृप्त हों।



जो देवताओं से भी पूजित हैं तथा सब प्रकार से श्राद्धोपयोगी पदार्थ जिन्हें अत्यन्त प्रिय हैं, वे पितर यहां पधारें। मेरे निवेदन किये हुए पुष्प, गंध, अन्न एवं भोज्य पदार्थों के निकट उनकी उपस्थिति हो। जो प्रतिदिन पूजा ग्रहण करते हैं, प्रत्येक मास के अंत में जिनकी पूजा करनी उचित है, जो अष्टकाओं में, वर्ष के अंत में तथा अभ्युदयकाल में भी पूजनीय हैं, वे मेरे पितर यहां तृप्ति लाभ करें।

जो ब्राह्मणों के यहां कुमुद और चन्द्रमा के समान शान्ति धारण करके आते हैं, क्षत्रियों के लिये जिनका वर्ण नवोदित सूर्य के समान है, जो वैश्यों के यहां सुवर्ण के समान उज्जवल कान्ति धारण करते हैं तथा शूद्रों के लिये जो श्याम वर्ण के हो जाते हैं, वे समस्त पितर मेरे दिये हुए पुष्प, गंध, धूप, अन्न और जल आदि से तथा अग्निहोत्र से सदा तृप्ति लाभ करें। मैं उन सबको प्रणाम करता हूं।

जो वैश्वदेवपूर्वक समर्पित किये हुए श्राद्ध को पूर्ण तृप्ति के लिये भोजन करते हैं और तृप्त हो जाने पर ऐश्वर्य की सृष्टि

करते हैं, वे पितर यहां तृप्त हों। मैं उन सबको नमस्कार करता हूं।



जो राक्षसों, भूतों तथा भयानक असुरों का नाश करते हैं, प्रजाजनों का अमंगल दूर करते हैं, जो देवताओं के भी पूर्ववर्ती तथा देवराज इन्द्र के भी पूज्य हैं, वे यहां तृप्त हों। मैं उन्हें प्रणाम करता हूं।

अग्निष्वात्त पितृगण मेरी पूर्व दिशा की रक्षा करें, बर्हिषद् पितृगण दक्षिण दिशा की रक्षा करें। आज्यप नाम वाले पितर पश्चिम दिशा की तथा सोमप संज्ञक पितर उत्तर दिशा की रक्षा करें। उन सबके स्वामी यमराज राक्षसों, भूतों, पिशाचों तथा असुरों के दोष से सब ओर से मेरी रक्षा करें।

विश्वक, विश्वभुक्, आराध्य, धर्म, धन्य, शुभानन, भूतिद, भूतिकृत् और भूति- ये पितरों के नौ गण हैं। कल्याण, कल्यताकर्ता, कल्य, कल्यतराश्रय, कल्यताहेतु तथा अनद्य- ये पितरों के छः गण माने गये हैं। वर, वरेण्य, वरद, पुष्टिद, तुष्टिद, विश्वपाता तथा धाता- ये पितरों के सात गण हैं। महान्, महात्मा, महित, महिमावान् और महाबल- ये पितरों के पापनाशक पांच गण हैं। सुखद, धनद, धर्मद और भूतिद- ये पितरों के चार गण कहे जाते हैं। इस प्रकार कुल इकतीस

पितरगण हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण जगत को व्याप्त कर रखा है। वे सब पूर्ण तृप्त होकर मुझ पर संतुष्ट हों और सदा मेरा हित करें।



मार्कण्डेयजी कहते हैं– मुने! इस प्रकार स्तुति करते हुए रुचि के समक्ष सहसा एक बहुत ऊंचा तेजपुंज प्रकट हुआ, जो सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त था। समस्त संसार को व्याप्त करके स्थित हुए उस महान् तेज को देखकर रुचि ने पृथ्वी पर घुटने टेक दिये और इस स्तोत्र का गान किया–

रुचि बोले– जो सबके द्वारा पूजित, अमूर्त, अत्यन्त तेजस्वी, ध्यानी तथा दिव्य दृष्टि सम्पन्न हैं, उन पितरों को मैं सदा नमस्कार करता हूं। जो इन्द्र आदि देवताओं, दक्ष, मारीच, सप्तर्षियों तथा दूसरों के भी नेता हैं, कामना की पूर्ति करने वाले उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूं।

जो मनु आदि राजर्षियों, मुनीश्वरों तथा सूर्य और चन्द्रमा के भी नायक हैं, उन समस्त पितरों को मैं जल और समुद्र में भी नमस्कार करता हूं।

नक्षत्रों, ग्रहों, वायु, अग्नि, आकाश और द्युलोक तथा पृथ्वी के भी जो नेता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं।



जो देवर्षियों के जन्मदाता, समस्त लोकों द्वारा वन्दित तथा सदा अक्षय फल के दाता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं।

प्रजापति, कश्यप, सोम, वरुण तथा योगेश्वरों के रूप में स्थित पितरों को सदा हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं।

सातों लोकों में स्थित सात पितरगणों को नमस्कार है। मैं योगदृष्टि सम्पन्न स्वयम्भू ब्रह्माजी को प्रणाम करता हूं।

चन्द्रमा के आधार पर प्रतिष्ठित तथा योगमूर्तिधारी पितरगणों को मैं प्रणाम करता हूं। साथ ही सम्पूर्ण जगत् के पिता सोम को नमस्कार करता हूं तथा अग्निस्वरूप अन्य पितरों को भी प्रणाम करता हूं; क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् अग्नि और सोममय है।

जो पितर तेज में स्थित हैं, जो ये चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं तथा जो जगत्स्वरूप एवं ब्रह्मस्वरूप हैं, उन सम्पूर्ण योगी पितरों को मैं एकाग्रचित्त होकर

प्रणाम करता हूं। उन्हें बारम्बार नमस्कार है। वे स्वधाभोजी पितर मुझपर प्रसन्न हों।



मार्कण्डेयजी कहते हैं– मुनिश्रेष्ठ! रुचि के इस प्रकार स्तुति करने पर वे पितर दसों दिशाओं को प्रकाशित करते हुए उस तेज से बाहर निकले। रुचि ने जो फूल, चन्दन और अंगराग आदि समर्पित किये थे, उन सबसे विभूषित होकर वे पितर सामने खड़े दिखाई दिये। तब रुचि ने हाथ जोड़कर पुनः भक्तिपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और बड़े आदर के साथ सबसे पृथक–पृथक कहा– 'आपको नमस्कार है, आपको नमस्कार है।' इससे प्रसन्न होकर पितरों ने मुनिश्रेष्ठ रुचि से कहा– 'वत्स! तुम कोई वर मांगो।' तब उन्होंने मस्तक झुकाकर कहा– 'पितरों! इस समय ब्रह्माजी ने मुझे सृष्टि करने का आदेश दिया है; इसलिये मैं दिव्य गुणों से सम्पन्न उत्तम पत्नी चाहता हूं, जिससे संतान की उत्पत्ति हो सके।'

पितरों ने कहा– वत्स! यहीं, इसी समय तुम्हें अत्यन्त मनोहर पत्नी प्राप्त होगी और उसके गर्भ से तुम्हें 'मनु' संज्ञक उत्तम पुत्र की प्राप्ति होगी। वह बुद्धिमान पुत्र मन्वन्तर का स्वामी होगा और तुम्हारे ही नाम पर तीनों लोकों में 'रौच्य' के नाम से उसकी ख्याति होगी। उसके भी महाबलवान् और

पराक्रमी बहुत से महात्मा पुत्र होंगे, जो इस पृथ्वी का पालन करेंगे। धर्मज्ञ! तुम भी प्रजापति होकर चार प्रकार की प्रजा उत्पन्न करोगे और फिर अपना अधिकार क्षीण होने पर सिद्धि प्राप्त करोगे।



जो मनुष्य इस स्तोत्र से भक्तिपूर्वक हमारी स्तुति करेगा, उसके ऊपर संतुष्ट होकर हम लोग उसे मनोवांछित भोग तथा उत्तम आत्मज्ञान प्रदान करेंगे। जो नीरोग शरीर, धन और पुत्र-पौत्र आदि की इच्छा करता हो, वह सदा इस स्तोत्र से हमारी स्तुति करे। यह स्तोत्र हम लोगों की प्रसन्नता बढ़ाने वाला है। जो श्राद्ध में भोजन करने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मणों के सामने खड़ा होकर भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके यहां स्तोत्र श्रवण के प्रेम से हम निश्चय ही उपस्थित होंगे और हमारे लिये किया हुआ श्राद्ध भी निःसन्देह अक्षय होगा। चाहे श्रोत्रिय ब्राह्मण से रहित श्राद्ध हो, चाहे वह किसी दोष से दूषित हो गया हो अथवा अन्यायोपार्जित धन से किया गया हो अथवा श्राद्ध के लिये अयोग्य दूषित सामग्रियों से उसका अनुष्ठान किया गया हो, अनुचित समय या अयोग्य देश में हुआ हो या उसमें विधि का उल्लंघन किया गया हो अथवा लोगों ने बिना श्रद्धा के या दिखावे के लिये किया हो तो भी

वह श्राद्ध इस स्तोत्र के पाठ से हमारी तृप्ति करने में समर्थ होता है। हमें सुख देने वाला यह स्तोत्र जहां श्राद्ध में पढ़ा जाता है, वहां हम लोगों को बारह वर्षों तक बनी रहने वाली तृप्ति प्राप्त होती है। यह स्तोत्र हेमन्त ऋतु में श्राद्ध के अवसर पर सुनाने से हमें बारह वर्षों के लिये तृप्ति प्रदान करता है। इसी प्रकार शिशिर ऋतु में यह कल्याणमय स्तोत्र हमारे लिये चौबीस वर्षों तक तृप्तिकारक होता है। वसन्त ऋतु में श्राद्ध में सुनाने पर यह सोलह वर्षों तक तृप्तिकारक होता है तथा ग्रीष्म ऋतु में पढ़े जाने पर भी यह उतने ही वर्षों तक तृप्ति का साधक होता है। रुचे! वर्षा ऋतु में किया हुआ श्राद्ध यदि किसी अंग से विकल हो तो भी इस स्तोत्र के पाठ से पूर्ण होता है और उस श्राद्ध से हमें अक्षय तृप्ति होती है। शरदकाल में भी श्राद्ध के अवसर पर यदि इसका पाठ हो तो यह हमें पन्द्रह वर्षों तक के लिये तृप्ति प्रदान करता है। जिस घर में यह स्तोत्र सदा लिखकर रखा जाता है, वहां श्राद्ध करने पर हमारी निश्चय ही उपस्थिति होती है; अतः महाभाग! श्राद्ध में भोजन करने वाले ब्राह्मणों के सामने तुम्हें यह स्तोत्र अवश्य सुनाना चाहिये; क्योंकि यह हमारी पुष्टि करने वाला है।

पितरदोष से शान्ति हेतु एवं पितरजनों की प्रसन्नता हेतु श्राद्ध के अवसर, पर्वकाल में अथवा नित्य इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। नित्य इसका पाठ करने से मनुष्य का सर्व प्रकार से कल्याण होता है। दक्षिण दिशा की ओर मुख करके श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन अर्पित करते हुए, तिल के तेल का दीपक प्रज्जवलित कर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।



## Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

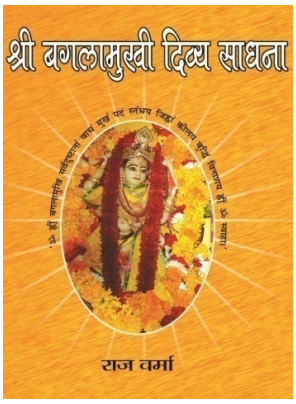
श्री बगलामुखी दिव्य साधना
राज वर्मा